केस स्टडी

बसंती देवी का प्रयास–गांव में कुंआ का स्वच्छ पानी

परिचय

बसंती देवी – धोबी टोला रामनगर, पंचायत ष्यामपुर कोतरांहा, प्रखण्ड नौतन, जिला पष्चिम चम्पारण (बिहार) की निवासी है। इनकी उम्र 52 वर्ष हैं। इनके पति का नाम दषई पासवान है। इनके दो लड़के तथा पांच लड़कियां है। अचल संपती के रूप में सिर्फ एक एकड़ जमीन हैं। इनका परिवार मेहनत मजदुरी करके जीवन बसर करता है।

पृष्ठभुमि

बसंती देवी एक अनपढ़ एवं साहसी महिला हैं। इनमें आत्मविष्वास, साहस, धैर्य व नेतृत्व क्षमता है। आज से 40 वर्ष पूर्व वह अपने मां के घर से यहां दषई पासवान के घर धोबी टोला पहुँची तो देखा कि हरेक साल बाढ़ आता है। यह भी अपने को बाढ़ क्षेत्र में रहने वाले लोगों की तरह ढाल लिया। बाढ से जूझती हुई कई भयंकर बाढ़ का भी सामना की है। एक बार 1993, 2003, 2007 की बाढ़ में तो इनके घर से होकर ही पानी की धारा बहने लगी थी जिसे इनका इंदिरा आवास का घर भी टूट गया है। फूस का घर पानी में बह गया। आज से 15–20 वर्ष पहले तो पानी पिने का साधन सिर्फ कुंआ ही था जो आज घर–घर में चपाकल आ जाने के कारण बंद हो गया है।

(वर्षो पुराना बंद कुंआ के पास बैठी बसंती देवी)

एक प्रयास से जुड़ाव

मेघ पाईन अभियान ने 2008 से इनके गांव में वर्षा जल संग्रहण के व्यक्तिगत तकनीक को लगवाना शुरू किया था तथा स्वच्छ पानी पर चर्चा शुरू किया। इसी दौरान एक गांव विकास समिति का गठन किया गया। जिसका नेतृत्व स्वंय बसंती देवी ने संभाली। ये समिति की सचिव है। जब कुंआ की बातें शुरू हुई तो इन्होंने प्रस्ताव दिलवाया कि 15–20 वर्षो से बंद हमारे गांव के कुंआ को भी मरम्मती कर पानी को पीने लायक बनवाया जाय। साथ ही बसंती देवी ने गांव की तरफ से कहा कि बनवाने में जो भी खर्च आयेगा उसमें हमलोग भी आर्थिक सहयोग करेंगे।

कुंआ मरम्मती का नेतृत्व

(बसंती देवी के द्वारा चालू कराया गया कुंआ)

बसंती देवी ने अपने ही समिति के भीखम साह और सुभान मियां को साथ में लेकर गांव के लोगों से चन्दा मांगना शुरू कर दिया। इनके साहस व उत्साह को देख कर गांव के झुन्ना मिश्र, मुस्तकिम मियां, राजेष ठाकुर, गिरजानन्द मिश्र, श्यामाकांत मिश्र, जनक मिश्र, मंषी मियां, जालिम मियां, दुखन मियां, अजीज मियां, बच्चा मियां, जलील मियां, मोजमिल मियां, मोहब्बत मियां, डोमा मिया, रामायण साह, बुधन साह, परमेष्वर साह, चोकट पासवान, इषई पासवान, सुभान मियां एवं विष्वनाथ साह ने 10 रूप्या से 100 रूप्या तक कुल 2500 रूप्या का नगद चंदा एवं श्रम के रूप में सहयोग दिया है। फिर अपने हाथ में चन्दा की राषि को वसूलने के बाद बसंती देवी ने अभियान के लोगों से कहा कि मेरे हाथ में नगद 1500 रूपया है, आपलोग सहयोग दे ताकि कुंआ बनवाया जा सके। फिर अभियान में 8181 रूप्या का सहयोग दिया और कुंआ बनकर तैयार हो गया। बसंती देवी स्वंय अपने पति का सहयोग लेकर कुंआ मरम्मती का कार्य पूरा किया। गांव के लोगों के सहयोग से बसंती देवी ने कुंआ को 7 बार उड़ाही–सफाई भी श्रमदान से कराया। वह हमेषा कुंआ की सफाई निगरानी में अपना समय देती रहती है।

कुंआ के पानी का उपयोग

कुंआ की मरम्मती, सफाई–उड़ाही, पानी का उपचार एवं पानी जांच के कार्य को सम्पन्न हो जाने के बाद यह कुंआ बहुत ही स्वच्छ एवं शुद्ध पेयजल का नमुना बन गया है। अन्य घरेलू कार्यो में पानी का भरपुर उपयोग कर रहे है। प्रतिदिन कुंआ से 30 परिवार के 200 लोग पानी का उपयोग कर रहें है। प्रतिदिन 1500 लीटर पीने में, 1600 लीटर खाना बनाने व अन्य कार्यो में तथा 5000 लीटर स्नाने करने में पानी का उपयोग हो रहा है। इस प्रकार देखें तो 8000 लीटर से अधिक कुंआ के पानी की दैनिक खपत है। इस कुंआ के पानी को पीने से लोगों में पेट की बिमारी, गैस्ट्रीक, सिर में चक्कर, ल्यूकोरिया आदि समाप्त हो चुका है।

आज बसंती देवी काफी खुष है। उनका सपना यही है कि जब तक जीवित रहेंगी तब तक इस कुए को बंद नहीं होने देगी। गांव के बाहर भी दूसरे–दूसरे गांवों में भी जाकर बसंती देवी कुंआ के पानी के बारे में चर्चा करती है तथा दूसरे गांवा वालों को भी कुंआ चालू करवाने के लिए प्रेरित कर रही है।